DHYEYA IAS
most trusted since 2003

DAILY pre PARE
Current affairs summary for prelims

9 June, 2023

मौद्रिक नीति समिति (MPC)

संदर्भ : RBI ने MPC की 2 दिनों की बैठक के बाद 8 जून को लगातार दूसरी बार नीतिगत दरों को अपरिवर्तित रखने का निर्णय लिया है।

- भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति (MPC) ने नीतिगत रेपो दर को 6.50% पर बनाए रखने का निर्णय लिया है।
- स्थायी जमा सुविधा (SDF) दर 6.25% पर अपरिवर्तित बनी हुई है, जबकि सीमांत स्थायी सुविधा (MSF) दर और बैंक दर 6.75% पर बनी हुई है।
- यह दूसरी बार है जब मुद्रास्फीति पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से दरों में बढ़ोतरी की श्रृंखला के बाद नीतिगत दर को में कोई बदलाव नहीं किया गया है।
- कच्चे तेल की कीमतों में कमी आई है, लेकिन परिदृश्य अनिश्चित बना हुआ है, और रिज़र्व बैंक के सर्वेक्षणों के अनुसार इनपुट लागत और आउटपुट कीमतों में वृद्धि होने की उम्मीद है।
- संतुलित जोखिम के साथ 2023-24 के लिए CPI मुद्रास्फीति 5.1% अनुमानित है, तिमाही दर 4.6% (Q1), 5.2% (Q2), 5.4% (Q3) और 5.2% (Q4) है।

मौद्रिक नीति क्या है?

- मौद्रिक नीति एक राष्ट्र की समग्र धन आपूर्ति को नियंत्रित करने और आर्थिक विकास प्राप्त करने के लिए क्रियाओं का एक समूह है।
- मौद्रिक नीति रणनीतियों में ब्याज दरों में संशोधन और बैंक रिजर्व आवश्यकताओं को बदलना शामिल है।
- मौद्रिक नीति को आमतौर पर विस्तार या संकुचन के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।
- RBI आमतौर पर मौद्रिक नीति के लिए तीन रणनीतियों का उपयोग करता है जिसमें रिज़र्व आवश्यकताएं, ब्याज दरें और खुले बाजार में संचालन शामिल हैं।

मौद्रिक नीति के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए **प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष उपकरणों** का उपयोग किया जाता है। इनमें से कुछ हैं:

- रेपो दर
- रिवर्स रेपो दर
- तरलता समायोजन सुविधा (LAF)
- सीमांत स्थायी सुविधा (MSF)
- कोरिडोर
- बैंक दर
- नकद रिजर्व अनुपात (CRR)
- वाधानिक निधि अनुपात (SLR)
- खुला बाजार परिचालन (OMOs)
- बाज़ार स्थिरीकरण योजना (MSS)

मौद्रिक नीति बनाम राजकोषीय नीति

- मौद्रिक नीति देश के केंद्रीय बैंक द्वारा शासित होती है। दूसरी ओर, राजकोषीय नीति वित्त मंत्रालय द्वारा निर्देशित होती है।
- राजकोषीय नीति की तुलना में मौद्रिक नीति लंबी अवधि के लिए की जाती है, जो केवल एक वर्ष के लिए तय की जाती है।
- मूल्य स्थिरता बनाए रखने में मौद्रिक नीति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। दूसरी ओर, राजकोषीय नीति अर्थव्यवस्था को एक विशेष दिशा देने के लिए उत्तरदायी होती है।
- मौद्रिक नीति पर राजनीतिक प्रभाव अनुपस्थित है। इसके विपरीत, राजकोषीय नीति पर राजनीति का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।
- मौद्रिक नीति विशेष रूप से वित्तीय प्रबंधन के साथ-साथ उधार लेने से संबंधित है। इसके विपरीत, राजकोषीय नीति में सरकारी राजस्व और व्यय शामिल होते हैं।
- मौद्रिक नीति पर राजनीतिक प्रभाव अनुपस्थित है। इसके विपरीत राजकोषीय नीति में राजनीति का नीति पर बड़ा प्रभाव पड़ता है।
- राजकोषीय नीति की तुलना में आर्थिक स्थिरता मौद्रिक नीति का मुख्य फोकस है, जो अर्थव्यवस्था के विकास पर केंद्रित है।
- किसी राष्ट्र की आर्थिक स्थिति सीधे तौर पर मौद्रिक नीति में बदलाव पर निर्भर करती है। दूसरी ओर, राजकोषीय नीति हर साल अपडेट की जाती है।

मौद्रिक नीति समिति

- मौद्रिक नीति समिति (MPC) का गठन भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) द्वारा 2016 उर्जित पटेल समिति की सिफ़ारिश पर किया गया था।
- यह भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 के प्रावधानों के तहत स्थापित किया गया था।
- MPC का प्राथमिक उद्देश्य मूल्य स्थिरता बनाए रखना और सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्य मुद्रास्फीति दर को प्राप्त करना है।
- संघटन
  - MPC में छह सदस्य होते हैं।
  - इसमें RBI द्वारा नामित तीन सदस्य शामिल हैं, जिनमें RBI के गवर्नर शामिल हैं जो MPC के पदेन अध्यक्ष के रूप में कार्य करते हैं।
  - अन्य तीन सदस्यों को भारत सरकार द्वारा नियुक्त किया जाता है।

अग्नि प्राइम (अग्नि-P) और एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम (IGMDP)

संदर्भ: भारत ने ओडिशा तट से नई पीढ़ी की अग्नि-प्राइम बैलिस्टिक मिसाइल का सफलतापूर्वक रात्रि प्रक्षेपण किया।

- अग्नि-पी एक बैलिस्टिक मिसाइल है जो मिसाइलों की अग्नि श्रृंखला से संबंधित है।
- यह दो चरणों वाली, सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइल है।
- मिसाइल रोड-मोबाइल है और एक ट्रक का उपयोग करके ले जाया जा सकता है।
- यह ठोस ईंधन द्वारा संचालित है, जो इसके परिचालन सुगमता को बढ़ाता देता है।
- अग्नि-पी को कनस्तर से लॉन्च किया जाता है, जो सुरक्षा और तैनाती में आसानी प्रदान करता है।
- मिसाइल दोहरी निरर्थक नेविगेशन और मार्गदर्शन प्रणाली से लैस है, जो सटीकता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करती है।
- अग्नि-पी को मध्यम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल (MRBM) माना जाता है।
- यह अग्नि श्रृंखला की छठी मिसाइल है।
- मिसाइलों की अग्नि श्रृंखला भारत के रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (DRDO) द्वारा विकसित की गई है।
- मिसाइल को पारंपरिक या परमाणु हथियार ले जाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

आईजीएमडीपी

- **अवलोकन:**
  - 1983 में भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया।
  - रक्षा उद्देश्यों के लिए स्वदेशी निर्देशित मिसाइलों को विकसित करने का लक्ष्य ।
  - रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) के नेतृत्व में ।
  - अन्य रक्षा संगठनों और उद्योगों के साथ सहयोग।

- **आईजीएमडीपी के तहत परियोजनाएं:**

1 **अग्नि:**
- फोकस: बैलिस्टिक मिसाइलें।
- लंबी दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल विकसित की।
- परमाणु हथियार ले जाने में सक्षम।

2 **पृथ्वी:**
- फोकस: सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइलें।
- विभिन्न श्रेणियों के लिए विकसित संस्करण।
- विभिन्न परिचालन उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाता है।

3. **आकाश:**
- फोकस: सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलें।
- हवाई लक्ष्यों को रोकने और नष्ट करने के लिए डिज़ाइन किया गया।
- वायु रक्षा क्षमताओं को बढ़ाता है।

4. **त्रिशूल :**
- फोकस: कम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलें।
- वायु रक्षा उद्देश्यों के लिए इरादा।
- प्रदर्शन संबंधी समस्याओं के कारण बंद कर दिया गया।

5. **नाग:**
- फोकस: एंटी टैंक गाइडेड मिसाइल।
- बख्तरबंद लक्ष्यों के खिलाफ सटीक हमलों के लिए डिज़ाइन किया गया।
- टैंक रोधी क्षमताओं को बढ़ाता है।

- **उद्देश्य:**
  - मिसाइल तकनीक में आत्मनिर्भरता हासिल करना।
  - आयात पर निर्भरता कम करना।
  - रक्षा क्षमताओं को बढ़ाना।
  - निवारक मुद्रा को मजबूत करना।

बिपरजॉय चक्रवात और चक्रवातों का नामकरण

संदर्भ: बिपरजॉय चक्रवात और तेज हो गया है और भारतीय मौसम विज्ञान विभाग द्वारा इसे अत्यंत भीषण चक्रवात के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

- बिपारजॉय नाम का चक्रवाती तूफान अरब सागर में विकसित हुआ।
- गोवा से लगभग 850 किमी पश्चिम और मुंबई से 900 किमी दक्षिण पश्चिम में स्थित है।
- 13 जून तक अत्यंत भीषण चक्रवाती तूफान बनने का अनुमान है।
- कर्नाटक, गोवा और महाराष्ट्र के समुद्र तट के साथ तूफानी मौसम की उम्मीद है।
- गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार के दौरान हवा की गति 35-45 किमी प्रति घंटे तक पहुंच सकती है।
- अरब सागर से सटे देशों पर किसी बड़े प्रभाव की भविष्यवाणी नहीं की गई है।
- केरल तट पर मॉनसून की शुरुआत की घोषणा सामान्य समय से आठ दिन देरी से की गई है।
- मुख्य भूमि भारत में मानसून की उत्तर की ओर प्रगति प्रभावित हो सकती है।
- अगले 48 घंटों में मॉनसून के मध्य अरब सागर, केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक के कुछ हिस्सों में बढ़ने की उम्मीद है।

उष्णकटिबंधीय चक्रवातों का नाम कैसे रखा जाता है?

- उष्णकटिबंधीय चक्रवातों पर WMO/ESCAP पैनल (PTC) ने 2000 में मस्कट, ओमान में बंगाल की खाड़ी और अरब सागर में उष्णकटिबंधीय चक्रवातों को नाम देने पर सहमति व्यक्त की।
- उत्तर हिंद महासागर में उष्णकटिबंधीय चक्रवातों का नामकरण सितंबर 2004 में शुरू हुआ।
- आठ सदस्य देशों द्वारा प्रस्तावित नामों की प्रारंभिक सूची : **बांग्लादेश, भारत, मालदीव, म्यांमार, ओमान, पाकिस्तान, श्रीलंका और थाईलैंड।**
- सितंबर 2018 में WMO/ESCAP के 45वें सत्र के दौरान चर्चा किए गए नामों की एक नई सूची की आवश्यकता पर सहमति हुई।
- नई सूची में शामिल पांच नए सदस्य देश: **ईरान, कतर, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और यमन।**
- नामों की नई सूची को 13 सदस्यीय देशों तक विस्तारित किया गया।
- PTC का 27वां सत्र 2000 में मस्कट, ओमान में आयोजित हुआ।
- IMD द्वारा अप्रैल 2020 में जारी किए गए 169 चक्रवातों के नामों की सूची इन 13 देशों द्वारा प्रदान की गई थी, जिनमें से प्रत्येक में 13 नाम दिए गए थे।

चक्रवातों के नाम अपनाने के लिए दिशानिर्देश

चक्रवातों के नाम चुनते समय, देशों को कुछ नियमों का पालन करने की आवश्यकता होती है, यथा

- प्रस्तावित नाम (1.) राजनीति और राजनीतिक आंकड़े (2.) धार्मिक विश्वास, (3.) संस्कृतियों और (4.) लिंग **के लिए तटस्थ होना चाहिए**
- नाम इस तरह से चुना जाना चाहिए कि यह दुनिया भर में आबादी के **किसी भी समूह की भावनाओं को ठेस न पहुंचाए**
- यह **बहुत कठोर और क्रूर स्वभाव का नहीं होना चाहिए**
- **छोटा, उच्चारण करने में आसान** होना चाहिए और किसी भी सदस्य के लिए आक्रामक नहीं होना चाहिए
- अधिकतम **लंबाई आठ अक्षरों की होनी चाहिए**
- प्रस्तावित नाम के उच्चारण और वॉइस ओवर के साथ प्रदान किया जाना चाहिए
- उत्तर हिंद महासागर के ऊपर उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के नामों को **दोहराया नहीं जाएगा**। एक बार इस्तेमाल करने के बाद यह दोबारा इस्तेमाल होना बंद हो जाएगा।

DHYEYA IAS
most trusted since 2003

DAILY pre PARE
Current affairs summary for prelims

9 June, 2023

NEWS IN BETWEEN THE LINES

चंद्रयान-3

संदर्भ: हाल ही में, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष एस. सोमनाथ ने घोषणा की कि चंद्रयान-3 चंद्रमा मिशन जुलाई के मध्य में लॉन्च किया जाना है।

चंद्रयान-3 :

इसरो भारत के चंद्र अन्वेषण कार्यक्रम के तीसरे मिशन चंद्रयान-3 के प्रक्षेपण की तैयारी कर रहा है। यह अपनी अंतरिक्ष अन्वेषण क्षमताओं को आगे बढ़ाने और चंद्रमा के बारे में वैज्ञानिक ज्ञान में योगदान देने की भारत की प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व करता है।

चंद्रयान-3 का उद्देश्य:

मिशन का उद्देश्य चंद्रयान -2 मिशन सहित पिछले चंद्रयान मिशनों की सफलताओं पर निर्माण करना है, जिसने 2019 में चंद्र दक्षिण ध्रुव के पास एक ऐतिहासिक लैंडिंग हासिल की।

चंद्रयान -3 के लिए प्रक्षेपण स्थल:

चंद्रयान -3 के लिए प्रक्षेपण स्थल श्रीहरिकोटा, आंध्र प्रदेश, भारत में स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (SDSC) है।

चंद्रयान-3 को लॉन्च करने के लिए किस रॉकेट का इस्तेमाल किया जाएगा?

चंद्रयान-3 को जीएसएलवी एमके III रॉकेट का उपयोग करके लॉन्च करने की योजना है। जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल मार्क III (GSLV Mk III) भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) द्वारा विकसित एक तीन-चरण भारी-भरकम लॉन्च वाहन है। इसमें चंद्रयान -3 जैसे चंद्र मिशन सहित भारी पेलोड लॉन्च करने की क्षमता है।

द बाबू एंड द बाजार

संदर्भ: डीएजी (दिल्ली आर्ट गैलरी) में "द बाबू एंड द बाज़ार" नामक प्रदर्शनी भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के वित्तीय केंद्र कोलकाता में 19वीं शताब्दी के दौरान निर्मित कला पर प्रकाश डालती है।

प्रदर्शन पर कलाकृतियाँ:

प्रदर्शनी में डीएजी संग्रह से काम करता है जिसमें कालीघाट पाट (पानी के रंग के चित्र) शामिल हैं जो कमीशन किए गए तेल चित्रों और बड़े पैमाने पर उत्पादित प्रिंटों के साथ जुड़े हुए हैं।

कालीघाट पट:

प्रदर्शनी "कालीघाट पट" के रूप में जानी जाने वाली कला के बारे में बताती है, जो 19वीं शताब्दी के कोलकाता में उत्पन्न जल रंग चित्रकला का एक स्कूल है। यह शब्द कलाकार मुकुल डे द्वारा गढ़ा गया था।

पारंपरिक तकनीक और सामग्री:

प्रदर्शनी कोलकाता के स्थानीय पटुआ (स्क्रॉल पेंटर्स) द्वारा उपयोग की जाने वाली तकनीकों और सामग्रियों पर प्रकाश डालती है।

ऐतिहासिक महत्व:

प्रदर्शनी कोलकाता में राष्ट्रवादी उत्साह के उद्भव तक कला के विकास को दर्शाती है। यह दर्शाता है कि स्वतंत्र भारत के विचार के प्रचार में कला ने कैसे भूमिका निभाई।

सिरी किले के रहस्यों की खोज

संदर्भ: हाल ही में, सिरी फोर्ट चिल्ड्रन पार्क में नवीनीकरण कार्य के दौरान, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) को सिरी फोर्ट क्षेत्र में एक मकबरे जैसी संरचना मिली।

ऐतिहासिक महत्व:

13वीं शताब्दी में अलाउद्दीन खिलजी द्वारा निर्मित सिरी किले ने उनकी सेना के लिए एक गैरीसन शहर के रूप में कार्य किया। इसने खिलजी वंश की रक्षा और प्रशासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

खंडहर और सीमा की दीवारें:

समय के साथ, सिरी किला खंडहर हो गया है और आज, केवल इसकी चारदीवारी ही बरकरार है। वर्तमान दिल्ली में किले का स्थान रणनीतिक रूप से हौज खास गांव के साथ चुना गया था जो सेना की पानी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक विस्तार के रूप में काम कर रहा था।

सागर परिक्रमा कार्यक्रम

संदर्भ: सागर परिक्रमा चरण VII कार्यक्रम मडक्करा, केरल से शुरू हुआ है।

मुख्य विशेषताएं:

सागर परिक्रमा चरण VII कार्यक्रम मत्स्य विभाग, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड और केरल, पुदुचेरी और लक्षद्वीप की सरकारों के सहयोग से आयोजित किया जाता है।

उद्देश्य:

सागर परिक्रमा कार्यक्रम का उद्देश्य तटीय क्षेत्रों और मछुआरा समुदाय के सामने आने वाले मुद्दों को समझने के लिए मछुआरों, मछली किसानों और अन्य हितधारकों के साथ सीधे बातचीत करना है।

लाभार्थी सहायता:

कार्यक्रम के दौरान, मछुआरों जैसे लाभार्थियों को सहायता और सहायता प्रदान की जाती है। मत्स्य पालन के लिए किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) पात्र व्यक्तियों को स्वीकृत किया जा रहा है, जिससे वित्तीय संसाधनों तक पहुंच आसान हो सके। इसके अतिरिक्त, प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई) जैसी योजनाओं को बढ़ावा दिया जाता है, जो मछुआरों और संबद्ध गतिविधियों को दिए जाने वाले लाभों का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

भागीदारी और लाइवस्ट्रीमिंग:

सागर परिक्रमा चरण VII कार्यक्रम में लगभग 5,000 मछुआरों, मछुआरिनों और मत्स्य पालन के विभिन्न हितधारकों की भागीदारी देखी गई।

Face to Face Centres

DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029

dhyeyaias.com

कखोवका बांध का टूटना

संदर्भ: हाल ही में, दक्षिणी यूक्रेन में नीपर नदी पर स्थित एक विशाल सोवियत युग की संरचना कखोवका बांध टूट गया था।

कखोवका बांध:

कखोवका बांध दक्षिणी यूक्रेन में कखोवका जलविद्युत संयंत्र का एक अभिन्न अंग है। इसका निर्माण सोवियत काल के दौरान किया गया था और यह बिजली उत्पादन और जल प्रबंधन सहित कई उद्देश्यों को पूरा करता है।

जलाशय:

बांध एक जलाशय बनाता है जो न केवल पनबिजली प्रदान करता है बल्कि क्रीमिया प्रायद्वीप और ज़ापोरीझिया परमाणु संयंत्र सहित विभिन्न क्षेत्रों में पानी की आपूर्ति भी करता है।

परिमाण और प्रभाव:

कखोवका बांध के जलाशय में पानी की मात्रा लगभग संयुक्त राज्य अमेरिका में ग्रेट साल्ट लेक के बराबर है। बांध के टूटने के कारण पानी की एक महत्वपूर्ण मात्रा को छोड़ दिया गया है, जिससे युद्ध क्षेत्र में बाढ़ आ गई है और संभावित रूप से आस-पास के इलाकों को प्रभावित किया है।

नीपर नदी:

नीपर नदी यूरोप की चौथी सबसे लंबी नदी है, जो रूस की वल्दाई पहाड़ियों के ऊपरी इलाकों से 1,368 मील तक फैली हुई है। यह काला सागर तक पहुँचने से पहले पश्चिमी रूस, बेलारूस और यूक्रेन से होकर दक्षिण दिशा में बहती है।